09-07-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - बाप आये हैं तुम्हें ज्ञान रत्न देने, बाप तुम्हें जो भी सुनाते वा समझाते हैं यह ज्ञान है, ज्ञान रत्न ज्ञान सागर के सिवाए कोई दे नहीं सकता"

Exclusive Authority of Shivbaba..

प्रश्नः-आत्मा की वैल्यु कम होने का मुख्य कारण क्या है?

उत्तर:- वैल्यु कम होती है खाद पड़ने से। जैसे सोने में खाद डालकर जेवर बनाते हैं तो उसकी वैल्यु कम हो जाती है। ऐसे आत्मा जो सच्चा सोना है, उसमें जब अपवित्रता की खाद पड़ती है तो वैल्यु कम हो जाती है। इस समय तमोप्रधान आत्मा की कोई वैल्यु नहीं। शरीर की भी कोई वैल्यु नहीं। अभी तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों याद से वैल्युबुल बन रहे हैं।

गीत:-यह कौन आज आया सवेरे-सवेरे....... Click

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति बाप बैठ समझाते हैं और याद की युक्तियाँ भी बता रहे

हैं। बच्चे बैठे हैं, बच्चों के अन्दर में है शिव भोले बाबा आये हैं। समझो आधा घण्टा शान्त में बैठ जाते हैं, बोलते नहीं हैं तो तुम्हारे अन्दर आत्मा कहेगी कि शिवबाबा कुछ बोले। जानते हो शिवबाबा विराजमान है, परन्तु बोलते नहीं हैं। यह भी तुम्हारी याद की यात्रा है ना। बुद्धि में शिवबाबा ही याद है। अन्दर में समझते हो बाबा कुछ बोले, ज्ञान रत्न देवे। बाप आते ही हैं तुम बच्चों को ज्ञान रत्न देने। वह ज्ञान का सागर है ना। कहेंगे - बच्चे, देही-अभिमानी हो रहो। बाप को याद करो। यह ज्ञान हुआ। बाप कहते हैं इस ड्रामा के चक्र को, सीढ़ी को और बाप को याद करो - यह ज्ञान हुआ। बाबा जो कुछ समझायेंगे उसको ज्ञान कहेंगे। याद की यात्रा भी समझाते रहते हैं। यह सब है ज्ञान रत्न। याद की बात जो समझाते हैं, यह रत्न बहुत अच्छे हैं। बाप कहते हैं अपने 84 जन्मों को याद करो। तुम पवित्र आये थे फिर पवित्र होकर ही जाना है। कर्मातीत अवस्था में जाना है और बाप से पूरा वर्सा लेना है। वह तब मिलेगा, जब आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी याद के बल से। यह अक्षर

Example

09-07-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मेरे बाबा मुजे लेने आये है...

हो गई है शाम चलो लौट चले घर....

बहुत वैल्युबुल है, नोट करने चाहिए। आत्मा में ही धारणा होती है। यह शरीर तो आरगन्स हैं जो विनाश हो जाते हैं। संस्कार अच्छे वा बुरे आत्मा में भरे जाते हैं। बाप में भी संस्कार भरे हुए हैं - सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज के, इसलिए उनको नॉलेजफुल कहा जाता है। बाबा राइट कर समझाते हैं - 84 का चक्र बिल्कुल सहज है। अभी 84 का चक्र पूरा हुआ है। अभी हमको वापिस बाप के पास जाना है। मैली आत्मा तो वहाँ जा न सके। तुम्हारी आत्मा पवित्र हो जायेगी तो फिर यह शरीर छूट जायेगा। पवित्र शरीर तो यहाँ मिल न सके। यह पुरानी जुत्ती है, इनसे वैराग्य आता जा रहा है। आत्मा को पवित्र बन फिर भविष्य में हमको पवित्र शरीर लेना है। सतयुग में हम आत्मा और शरीर दोनों पवित्र थे। इस समय तुम्हारी आत्मा अपवित्र बन गई है तो शरीर भी अपवित्र है। जैसा सोना वैसा जेवर। गवर्मेन्ट भी कहती है हल्के सोने का जेवर पहनो। उसका भाव कम है। अभी तुम्हारी आत्मा की भी वैल्यु कम है। वहाँ तुम्हारी आत्मा की कितनी वैल्यु रहती है।

09-07-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Point to be Noted

सतोप्रधान है ना। अभी है तमोप्रधान। खाद पड़ी है, कोई काम की नहीं है। वहाँ आत्मा पवित्र है, तो बहुत वैल्यु है। अभी 9 कैरेट बन गई है तो कोई वैल्यु नहीं है इसलिए बाप कहते हैं आत्मा को पवित्र बनाओ तो फिर शरीर भी पवित्र मिलेगा। यह ज्ञान और कोई दे न सके।

Exclusive Authority of Shivbaba..

बाप ही कहते हैं मामेकम् याद करो। श्रीकृष्ण कैसे कहेंगे। वह तो देहधारी है ना। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। कोई देहधारी को याद न करो। अभी तुम समझते हो तो फिर समझाना है। शिवबाबा है निराकार, उनका अलौकिक जन्म है। तुम बच्चों को भी अलौकिक जन्म देते हैं। अलौकिक बाप अलौकिक बच्चे।

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥
Imp.
हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं—इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे* जान लेता है, वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको प्राप्त नहीं होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है॥ ९॥ Adhyay-4

(1) लौकिक, (2) Shiva पारलौकिक और (3) Brahma अलौकिक कहा जाता है। तुम बच्चों को अलौकिक जन्म मिलता है। बाप तुमको एडाप्ट कर वर्सा देते हैं। तुम जानते हो हम ब्राह्मणों का भी अलौकिक जन्म है। अलौकिक बाप से अलौकिक वर्सा मिलता है। ब्रह्माकुमार-कुमारियों बिगर और कोई स्वर्ग का मालिक बन न

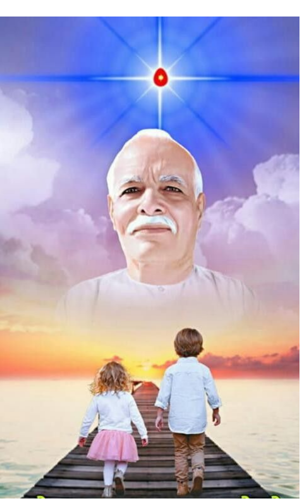

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

One and Only Way...

ये पक्का समझ लो

सके। मनुष्य कुछ भी समझते नहीं। तुमको बाप कितना समझाते हैं। आत्मा जो अपवित्र बनी है वह सिवाए याद के पवित्र बन नहीं सकती। याद में नहीं रहेंगे तो खाद रह जायेगी। पवित्र बन नहीं सकेंगे फिर सज़ायें खानी पड़ेंगी। सारी दुनिया की मनुष्य आत्माओं को पवित्र बन वापिस जाना है। शरीर तो नहीं जायेगा। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझना कितना मुश्किल रहता है। धन्धे आदि में वह अवस्था थोड़ेही रहती है। बाप कहते हैं अच्छा अपने को आत्मा नहीं समझते हो तो शिवबाबा को याद करो। धंधा आदि करते यही मेहनत करो कि मैं आत्मा इस शरीर से काम करती हूँ। मैं आत्मा ही शिवबाबा को याद करती हूँ। आत्मा ही पहले-पहले पवित्र थी, अब फिर पवित्र बनना है। यह है मेहनत। इसमें बड़ी जबरदस्त कमाई है। यहाँ कितने भी साहूकार हैं, अरब-खरब हैं परन्तु वह सुख नहीं है। सबके सिर पर दु:ख हैं। बड़े-बड़े राजायें, प्रेजीडेन्ट आदि आज हैं, कल उनको मार देते। विलायत में क्या-क्या होता रहता है। साहूकारों पर, राजाओं पर तो

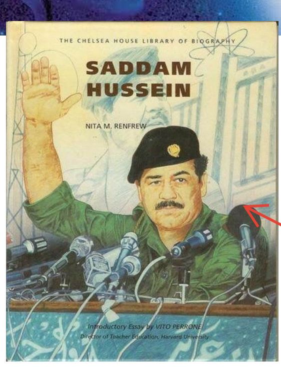

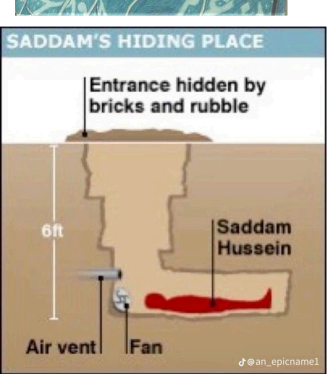

।

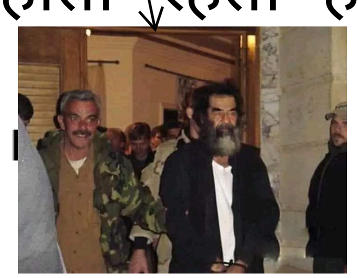

योग धारणा सेवा M.imp.

मुसीबत है। यहाँ भी जो राजायें थे वह प्रजा बन गये हैं। राजाओं पर फिर प्रजा का राज्य हो गया है। ड्रामा में ऐसे नूँध है। पिछाड़ी में ही यह हाल होता है। बहुत ही आपस में लड़ते रहेंगे। तुम जानते हो कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। तुम गुप्त वेष में दिल व जान, सिक व प्रेम से अपना गँवाया हुआ राज्य लेते हो। तुमको पहचान मिली है - हम तो मालिक थे, सूर्यवंशी देवतायें थे। अभी फिर वह बनने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो क्योंकि यहाँ तुम सत्य नारायण की कथा सुन रहे हो ना। बाप द्वारा हम नर से नारायण कैसे बनें? बाप आकर राजयोग सिखलाते हैं। भक्ति मार्ग में यह कोई सिखला न सके। कोई भी मनुष्य को बाप, टीचर, गुरू नहीं कहेंगे। भक्ति में कितनी पुरानी कहानियाँ बैठ सुनाते हैं। अब तुम बच्चों को 21 जन्म विश्राम पाने के लिए पावन तो जरूर बनना पड़े।

It's Compulsory

बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। आधाकल्प तो ड्रामा अनुसार देह-अभिमानी हो रहते हो, अब देही-अभिमानी बनना है। ड्रामा

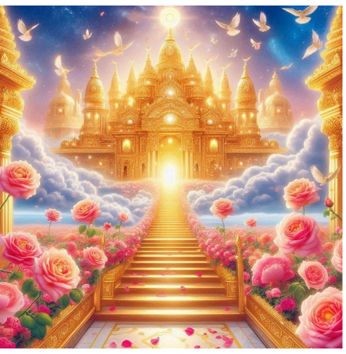

अनुसार अब पुरानी दुनिया को बदल नया बनना है। दुनिया तो एक ही है। पुरानी दुनिया से फिर नई बनेगी। नई दुनिया में नया भारत था तो उसमें देवी-देवता थे, कैपीटल भी जानते हो, जमुना का कण्ठा था, जिसको परिस्तान भी कहते थे। वहाँ नैचुरल ब्युटी रहती है। आत्मा पवित्र बन जाती है तो पवित्र आत्मा को शरीर भी पवित्र मिलता है। बाप कहते हैं मैं आकर तुमको हसीन सो देवी-देवता बनाता हूँ। तुम बच्चे अपनी जांच करते रहो, कोई हमारे में अवगुण तो नहीं है? याद में रहते हैं? पढ़ाई भी पढ़नी है। यह है बहुत बड़ी पढ़ाई। एक ही पढ़ाई है, उस पढ़ाई में तो कितने किताब आदि पढ़ते हैं। यह पढ़ाई है ऊंच ते ऊंच, पढ़ाने वाला भी है ऊंच ते ऊंच शिवबाबा। ऐसे नहीं कि शिवबाबा कोई इस दुनिया का मालिक है। विश्व के मालिक तो तुम बनते हो ना। कितनी नई-नई गुह्य बातें तुमको सुनाते रहते हैं। मनुष्य समझते हैं परमात्मा सृष्टि का मालिक है। बाप समझाते हैं - मीठे-मीठे बच्चों, मैं इस सृष्टि का मालिक नहीं हूँ। तुम मालिक बनते हो और फिर राज्य गँवाते हो। फिर

जी मेरे मीठे बाबा...

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

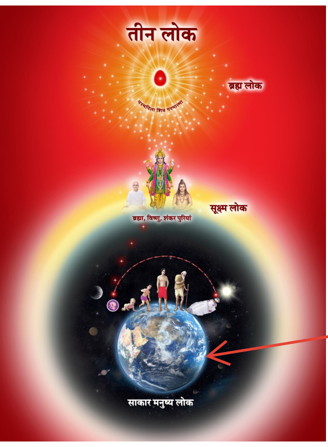

09-07-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बाप आकर विश्व का मालिक बनाते हैं। विश्व इसको ही कहा जाता है। मूलवतन वा सूक्ष्मवतन की बात नहीं है। मूलवतन से तुम यहाँ आकर 84 जन्म का चक्र लगाते हो। फिर बाप को आना पड़ता है। अभी फिर तुमको पुरुषार्थ कराता हूँ - वह प्रालब्ध पाने के लिए, जो तुमने गँवाई है। हार और जीत का खेल है ना। यह रावण राज्य खलास होना है। बाप कितना सहज रीति समझाते हैं। बाप खुद बैठ पढ़ाते हैं। वहाँ तो मनुष्य, मनुष्य को पढ़ाते हैं। हो तुम भी मनुष्य परन्तु बाप तुम आत्माओं को बैठ पढ़ाते हैं। पढ़ाई के संस्कार आत्मा में ही रहते हैं। अभी तुम बहुत नॉलेजफुल हो, वह सब है भक्ति की नॉलेज। कमाई के लिए भी नॉलेज है। शास्त्रों की भी नॉलेज है। यह है रूहानी नॉलेज। तुम्हारी रूह को रूहानी बाप बैठ नॉलेज सुनाते हैं। 5 हज़ार वर्ष पहले भी तुमने सुनी थी। सारे मनुष्य सृष्टि भर में ऐसे कभी कोई पढ़ाता नहीं होगा। किसको भी पता नहीं, ईश्वर कैसे पढ़ाते हैं?

जरा सोचो तो सही...

चढ़ाओ नशा...

How Lucky & Great we all are...!

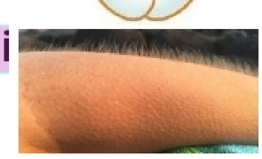

तुम बच्चे जानते हो अभी इस पढ़ाई से किंगडम स्थापन हो रही है। जो अच्छी रीति पढ़ते और श्रीमत पर चलते हैं वह हाइएस्ट बनते हैं और जो बाप की जाए निंदा कराते हैं, हाथ छोड़ जाते हैं वह प्रजा में बहुत कम पद पाते हैं। बाप तो एक ही पढ़ाई पढ़ाते हैं। पढ़ाई में कितनी मार्जिन है। डीटी किंगडम थी ना। एक ही बाप है जो यहाँ आकर किंगडम स्थापन करते हैं। बाकी यह सब विनाश हो जाना है। बाप कहते हैं - बच्चे, अब जल्दी तैयारी करो। ग़फलत में टाइम वेस्ट नहीं करो। याद नहीं करते हैं तो मोस्ट वैल्युबुल टाइम नुकसान होता है। शरीर निर्वाह अर्थ धंधा आदि भल करो फिर भी हथ कार डे दिल यार डे। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो राजाई तुमको मिल जायेगी। खुदा दोस्त की कहानी भी सुनी है ना। अल्लाह अवलदीन का भी नाटक दिखाते हैं। ठका करने से खजाना निकल आया। अभी तुम बच्चे जानते हो - अल्लाह तुमको ठका करने से क्या से क्या बनाते हैं। झट दिव्य दृष्टि से वैकुण्ठ चले जाते हो। आगे बच्चियां आपस में मिलकर बैठती थी, फिर आपेही

contrast

It is 2025

अब तो जागो....

Wake up, 89 years lapsed

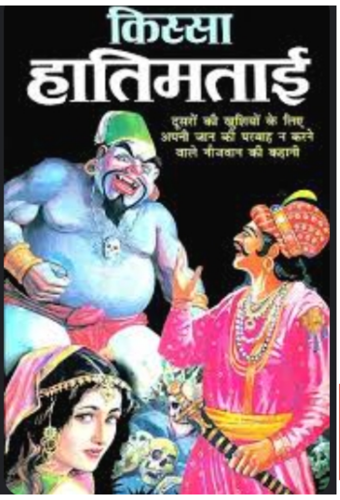

चली जाती थी ध्यान में। फिर जादू कह देते थे। तो वह बंद कर दिया। तो यह सब बातें हैं इस समय की। हातमताई की भी कहानी है। मुहलरा मुख में डालते थे तो माया गुम हो जाती थी। मुहलरा निकालने से माया आ जाती थी। रहस्य तो कोई समझ न सके। बाप कहते हैं बच्चे मुख में मुहलरा डाल दो। तुम शान्ति के सागर हो, आत्मा शान्ति में अपने स्वधर्म में रहती है। सतयुग में भी जानते हैं कि हम आत्मा हैं। बाकी परमात्मा बाप को कोई भी नहीं जानते। कभी भी कोई पूछे - बोलो वहाँ विकार का नाम नहीं है। है ही वाइसलेस वर्ल्ड। 5 विकार वहाँ होते ही नहीं। देह-अभिमान ही नहीं। माया के राज्य में देह-अभिमानी बनते हैं, वहाँ होते ही हैं मोहजीत। इस पुरानी दुनिया से नष्टोमोहा होना है। वैराग्य तो उनको आता है जो घरबार छोड़ते हैं। तुमको तो घरबार नहीं छोड़ना है। बाप की याद में रहते यह पुराना शरीर छोड़कर जाना है। सबका हिसाब-किताब चुक्तू होना है। फिर चले जायेंगे घर। यह कल्प-कल्प होता है। तुम्हारी बुद्धि अभी दूर-दूर ऊपर जाती है, वो लोग देखते हैं कहाँ

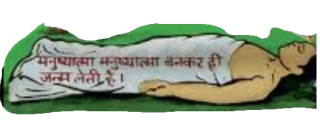

Judgement Day

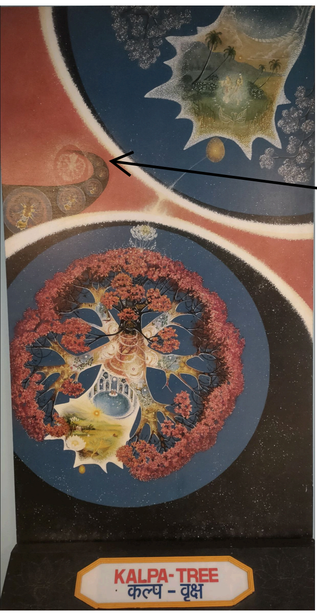

So, Be Prepared..

तक सागर है? सूर्य-चांद में क्या है? आगे समझते थे यह देवतायें हैं। तुम कहते हो यह तो माण्डवे की बत्तियां हैं। यहाँ खेल होता है। तो यह बत्तियां भी यहाँ हैं। मूलवतन, सूक्ष्मवतन में यह होती नहीं। वहाँ खेल ही नहीं। यह अनादि खेल चला आता है। चक्र फिरता रहता है, प्रलय होती नहीं। भारत तो अविनाशी खण्ड है, इसमें मनुष्य रहते ही हैं, जलमई होती नहीं। पशू-पक्षी आदि जो भी हैं, सब होंगे। बाकी जो भी खण्ड हैं, वह सतयुग-त्रेता में रहते नहीं। तुमने जो कुछ दिव्य दृष्टि से देखा है, वह फिर प्रैक्टिकल में देखेंगे। प्रैक्टिकल में तुम वैकुण्ठ में जाकर राज्य करेंगे। जिसके लिए पुरुषार्थ करते रहते हो, फिर भी बाप कहते हैं याद की बड़ी मेहनत है। माया याद करने नहीं देती है।

m.m.m. Imp → Refer the last page

बहुत प्यार से बाबा को याद करना है। अज्ञान काल में भी प्यार से बाप की महिमा करते हैं। हमारा फलाना ऐसा था, फलाने मर्तबे वाला था। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा सृष्टि चक्र बैठा हुआ है। सब धर्मों की नॉलेज है। जैसे वहाँ रूहों का सिजरा है, यहाँ फिर मनुष्य सृष्टि का सिजरा है। ग्रेट-ग्रेट

09-07-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

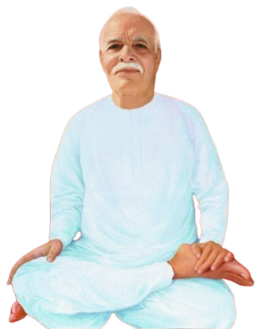

ग्रैन्ड फादर ब्रह्मा है। फिर है तुम्हारी बिरादरी। सृष्टि तो चलती रहती है ना।

बाप समझाते हैं - बच्चे, नर से नारायण बनना है तो तुम्हारी जो कथनी है, वही करनी हो। पहले अपनी अवस्था को देखना है। बाबा हम तो आपसे पूरा वर्सा लेकर ही छोड़ेंगे, तो वह चलन भी चाहिए। यह एक ही पढ़ाई है, नर से नारायण बनने की। यह तुमको बाप ही पढ़ाते हैं। राजाओं का राजा तुम ही बनते हो, और कोई खण्ड में होते नहीं। तुम पवित्र राजायें बनते हो, फिर बिगर लाइट वाले अपवित्र राजायें पवित्र राजाओं के मन्दिर बनाकर पूजा करते हैं। अभी तुम पढ़ रहे हो। स्टूडेन्ट टीचर को क्यों भूलते हैं! कहते हैं बाबा माया भुला देती है। दोष फिर माया पर रख देते हैं।

Mind it...

अरे, याद तो तुमको करना है। मुख्य टीचर एक ही है, बाकी और सब हैं नायब टीचर्स। बाप को भूल जाते हो, अच्छा टीचर को याद करो। तुमको 3 चांस दिये जाते हैं। एक भूले तो दूसरे को याद करो। अच्छा।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

09-07-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) बाप से पूरा वर्सा लेने के लिए जो कथनी हो वही करनी हो, इसका पुरुषार्थ करना है। मोहजीत बनना है।

2) सदा याद रहे कि "हम शान्ति के सागर के बच्चे हैं, हमें शान्ति में रहना है।" मुख में मुहलरा डाल लेना है। ग़फलत में अपना टाइम वेस्ट नहीं करना है।

09-07-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:-संगठन रूपी किले को मजबूत बनाने वाले सर्व के स्नेही, सन्तुष्ट आत्मा भव

संगठन की शक्ति विशेष शक्ति है। एकमत संगठन के किले को कोई भी हिला नहीं सकता।

लेकिन इसका आधार है एक दो के स्नेही बन सर्व को रिगार्ड देना और स्वयं सन्तुष्ट रहकर सर्व को सन्तुष्ट करना। न कोई डिस्टर्ब हो और न कोई डिस्टर्ब करे। सब एक दो को शुभ भावना और शुभ कामना का सहयोग देते रहें तो यह संगठन का किला मजबूत हो जायेगा।

संगठन की शक्ति ही विजय का विशेष आधार स्वरूप है।

स्लोगन:- जब हर कर्म यथार्थ और युक्तियुक्त हो तब कहेंगे पवित्र आत्मा।

Definition of..

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

अव्यक्त इशारे - संकल्पों की शक्ति जमा कर श्रेष्ठ सेवा के निमित्त बनो

हर एक बच्चा जो स्व प्रति वा सेवा के प्रति उमंगों के अच्छे-अच्छे संकल्प करता है कि अभी से यह करेंगे, ऐसे करेंगे, अवश्य करेंगे, करके ही दिखायेंगे ... ऐसे श्रेष्ठ संकल्प के बीज जो बोते हो, उस संकल्प को अर्थात् बीज को प्रैक्टिकल में लाने की पालना करते रहो तो वह बीज फल स्वरूप बन जायेगा।

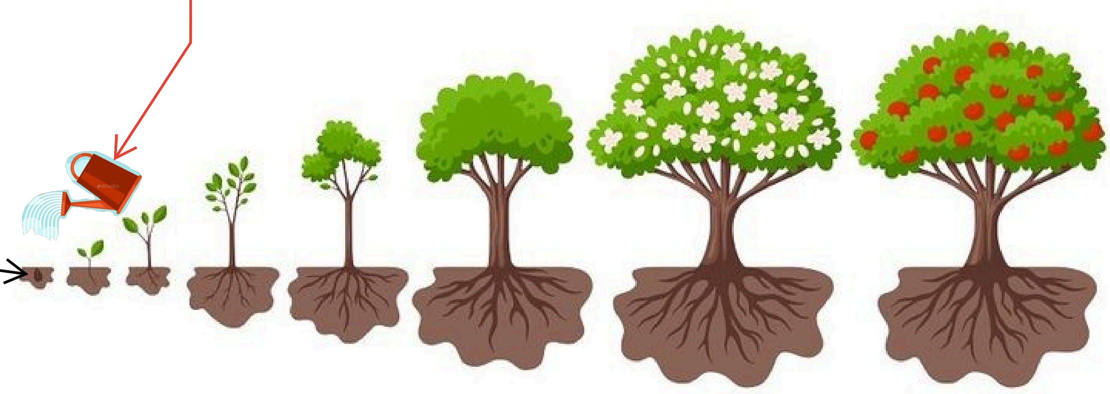

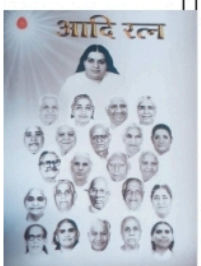

सारे दिन के पोतामेल को ठीक रीति से निकाल सकते हो? यह मालूम पडता है कि मेल गाड़ी की रफ्तार है? बापदादा के संस्कारों से मेल करना है। आप लोगों को, जिन्होंने साकार रूप से साथ रहकर सेकण्ड के संकल्प, संस्कार का अनुभव किया है, उनसे मेल करना है। औरों को बुद्धियोग से खींचना पडता है। आप लोगों को सिर्फ सामने लाना पडता है। इसलिए संकल्प, संस्कार को मिलाते जाना है। समय नष्ट नहीं करना है, फौरन निर्णय करना है कि क्या करना है, क्या नहीं करना है? इसमें समय की भी बचत है और बुद्धि की शक्ति भी जो नष्ट होती है उसकी भी बचत है। अपने पुरुषार्थ से संतुष्ट हो? सम्पूर्ण करेंगे। सर्टीफिकेट एक तो जो रेस्पान्सिबुल हैं उन्होंने दिया ताकि रफ्तार है? बापदादा के संस्कारों से मेल करना है। आप लोगों को, जिन्होंने साकार रूप से साथ रहकर सेकण्ड के संकल्प, संस्कार का अनुभव किया है, उनसे मेल करना है। औरों को बुद्धियोग से खींचना पडता है। आप लोगों को सिर्फ सामने लाना पडता है। इसलिए संकल्प, संस्कार को मिलाते जाना है। समय नष्ट नहीं करना है, फौरन निर्णय करना है कि क्या करना है, क्या नहीं करना है? इसमें समय की भी बचत है और बुद्धि की शक्ति भी जो नष्ट होती है उसकी भी बचत है। अपने पुरुषार्थ से संतुष्ट हो? सम्पूर्ण करेंगे। सर्टीफिकेट एक तो जो रेस्पान्सिबुल हैं उन्होंने दिया तो लोकपसन्द हुए, रचना को भी संतुष्ट रखना है। उन्हों की चलन से ही कैच करना है कि संतुष्ट हैं? जब कोई मधुबन में आते हैं तो निमित्त बनी हुई बहनों द्वारा अपना सर्टीफिकेट ले जावें। यह सभी सर्टीफिकेट धर्मराज पुरी में काम आयेंगे। जैसे रास्ते में कार चलाने वाले को सर्टीफिकेट होता है तो दिखा देने से रास्ता पार कर लेते हैं। ऐसे धर्मराजपुरी में भी यह सर्टीफिकेट काम में आयेगा। इसलिए जितना हो सके सर्टीफिकेट लेते जाओ। क्योंकि ट्रिब्युनल में भी यही महारथी बैठते हैं इन्हों की सर्टीफिकेट काम में आयेगी। यहाँ से सर्टीफिकेट ले जाने से दूसरी आत्माओं को सैटिस्फाय करने की विशेषता आयेगी। अनुभवी बहनें अनेको को सैटिस्फाय करने की शिक्षा देती

हैं। अनेकों को सैटीस्फाय करने की युक्ति है सर्टीफिकेट।

(21.01.1971)

शिवबाबा से मीठी मीठी दृढ़ संकल्प से भरी हुई रूह रूहान....

Here is the wonderful song

From the Movie: bajarangi bhaijaan

Click

Haal-e-Dil ko sukoon chahiye
Poori ik aarzoo chahiye

(सतयुग से तुम्हारी जुदाई के कारन जो मेरे दिल की हालत है, उसे अब सुकून चाहिए - जो की तुम्हे पाकर या तुझमे समा कर ही मिल सकता है।
और कुछ वैसे ही द्वापर से लेकर के सिर्फ और सिर्फ तुम्हे पाने की आरजू थी वो पूरी होनी चाहिए - फिर चाहे कोई भी किंमत क्यों न चुक्तू करनी पड़े।)

Jaise pehle kabhi kuch bhi chaaha nahi
Waise hi kyun chahiye

(और अब जो तुम सामने हो, तो द्वापर से लेकर अब तक जो पहले कभी भी चाहा नहीं है। वैसा ही अर्थात तूम और सिर्फ तूम ही क्यों चाहिए...? एक संकल्प मात्र भी दूजा कुछ नहीं।)

Dil ko teri mojoodgi ka ehsaas yun chahiye

(इस पागल दिल को हर पल, हर क्षण तुम्हारी मेरे से combined मौजूदगी का एहसास यूँ चाहिए की जिससे हम दो, दो न रहकर एक हो कर रहे।)

Tu chahiye, tu chahiye
Shaam-o-subah tu chahiye
Tu chahiye.. Tu chahiye..
Har martabaa Tu chahiye

(तो बस अब मुझे शाम और सुबह, इन short हर एक पल, हर मर्तबा/हर दम तुम और सिर्फ तुम ही मुझे चाहिए।)

Jitni dafaa.. zidd ho meri
Utni dafaa.. haan, Tu chahiye

(हर एक कल्पमें, कलयुग के अंत में जब तुम्हे पाने की मेरी जिद हो तब तुम्हे अपना परमधाम छोड़कर मेरे लिए इस साकार श्रुष्टी में आना पड़े। - और यही तो रहष्य है तुम्हारे इस साकार श्रुष्टी में आने का, जिसे तुम drama के अनुसार तुम्हारा आना कहते हो।)

###$$$$%%%

Wo o...
Wo oo...

Koi aur dooja kyun mujhe
Na tere siva chahiye

(तो अब तुम्हारे सिवा क्यों मुझे अब कोई भी माना कोई भी दूजा संकल्प मात्र में भी नहीं चाहिए..?)

Har safar mein mujhe
Tu hi rehnuma chahiye

(अब हर एक सफ़र में, चाहे कितनी ही कठिनाइयों वाला रास्ता क्यों न हो। बस तुम ही मेरे रहनुमा/guide बनकर मेरे साथ रहो - इतना ही चाहिए।
इस दुनिया में किसी की भी मुझे जरुरत नहीं है और मेरे संकल्प में भी तुम्हारे सिवा और कोई नहीं चाहिए।)

Jeene ko bas mujhe
Tu hi meherbaan chahiye

(मेरे जीने के लिए सिर्फ एक तू ही सदा एवं सच्चा मेहरबान चाहिए।
बस, इतने में ही हो चुकी मेरी सूक्ष्म, स्थूल - सभी की सभी ख्वाहिशें पूरी।
नहीं चाहिए सतयुग का सर्वोच्च विश्व महाराजन का पद भी।)

Ho..
Seene mein agar tu dard hai
Na koi dawaa chahiye

(अगर मेरे सीने में दर्द उठता है और वो तुम्हारे कारण है तो उसे ठीक करने के लिए कभी भी कोई भी दवाई मुझे नहीं चाहिए।
जिससे की उस दर्द को अर्थात तुमको कभी भी अपने से जुदा न होने दूँ।)

Tu lahu ki tarah
Ragon mein rawaan chahiye

(जैसे जिस्म में अगर खून न हो तो जिस्म रहेंगा ही नहीं।
ठीक उसी तरह मैं जिस्म हूँ और तुम लहुँ हो, जो हरदम मुज में समाए हुए रहने चाहियें।)

Anjaam jo chaahe mera ho
Aagaaz yun chahiye

(अंजाम चाहे कितना ही भयानक और दर्दनाक क्यों न हो, किन्तु आगाज़/शुरुआत तो ऐसा ही चाहिए, जिसमे सदैव मैं तूझमें और तुम मुझमें समाये हुए combined हो।)

Tu chahiye, tu chahiye
Shaam-o-subah tu chahiye
Tu chahiye.. tu chahiye..
Har martabaa tu chahiye

Jitni dafaa.. zidd ho meri
Utni dafaa.. haan, tu chahiye

Wo o...
Wo oo...

Mere zakhmon ko teri chhuan chahiye

(यूं तो सतयुग से ही किंतु खास द्वापर से लेकर के इस संगम तक तुम साथ न होने के कारन जो जख्म लगे है मुझपे, उन सभी जख्मों को सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी छुअन(combined रूप से) चाहिए और वो भी सदा काल के लिए।)

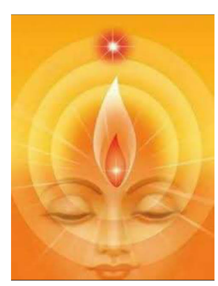

Meri shamma ko teri agan chahiye

(द्वापर से बुजी हुई मुज समां को सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी ही अगन चाहिए और again सदा के लिए।)

Mere khwaab ke aashiyane mein tu chahiye

(मैंने जो अपने ख्वाबो का आशियाना/घर बनाया है उसमे सिर्फ और सिर्फ तुम और मैं रहूं तीसरा न कोई।
तो बस इतना ही चाहिए, इससे आगे एक संकल्प भी नहीं।)

Main kholun jo aankhein sirhane bhi tu chahiye

(तो मेरे ऐसे सपनों के आशियाने में, तुम्हारी गोद में मेरा शिर हो और जब भी मैं आँखे खोलू तो मेरे शिरहाने सिर्फ तुम्हारा चेहरा ही दिखाई दे।
बस और कुछ भी नहीं।
जो पाना था वो पा लिया।)

Wo ho...
Wo ho ho...

link of other such type of songs to submerge in the love of supreme →

Click